नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक.....

दिनांक : 24.08.2022

प्रकाशनार्थ

नेता कौन है? नेता नेत्र शब्द से बना है। नेता वह नहीं जो दिखावे का वस्त्र, माला आदि पहन कर चले। जो किसी क्षेत्र में अग्रणी है, जो नेतृत्व करने की क्षमता रखता है, समूह को अपने साथ लेकर चलता है, वह नेता है। महाराणा प्रताप नेतृत्वकर्ता थे, जो जनता के साथ जुड़े थे। इन्होंने शत्रु के आगे घुटने नहीं टेके एवं संघर्षों का सामना साहस के साथ किया था। आगे चलकर हल्दीघाटी के युद्ध में मुगलों को बुरी तरह से पराजित किया था। महाराणा प्रताप चरित्र के बलवान, साहसी व कभी न हार मानने वाले योद्धा थे। जो जमीन से जुड़ा रहता है, वही सच्चा नेता है, अहंकार से कोई नेता नहीं बन सकता है। श्रीराम, श्रीकृष्ण, महात्मा गाँधी, सैम मानेक्सा आदि सच्चे एवं जमीन से जुड़े हुए नेतृत्वकर्ता थे। इन सबने अपने कुशल नेतृत्व से अहंकार रूपी शत्रु पर विजय प्राप्त की थी। रावण, भीष्म, मोहम्मद अली जिन्ना, ऐलेक्जेन्डर आदि अनैतिकता एवं अहंकार से जुड़े थे। जो सच्चा नेता होता है वह सम्पूर्ण समाज को एकत्र करने की क्षमता रखता है। असहयोग आन्दोलन, नमक सत्याग्रह के माध्यम से महात्मा गाँधी ने सम्पूर्ण भारतीय समाज को एकत्र किया था और सबको जोड़ने का कार्य किया।

उक्त बातें मुख्य अतिथि मेंजर जनरल श्री अजय कुमार चतुर्वेदी (से.नि.) पीवीएसएम, एवीएसएम लखनऊ ने **आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर** में आयोजित **राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ स्मृति सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला** के **तीसरे दिन 'मूल्य आधारित नेतृत्व'** विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कही।

उन्होंने आगे नेता के गुण बताते हुए कहा कि नेता को एकाग्रचित्त होना चाहिए। उसमें दूरदृष्टि, आत्मविश्वास, साहस, करूणा, सत्यनिष्ठा होनी चाहिए। साथ ही उसमें अन्तर्वैक्तिक समझ, सम्मान, तारम्यता होनी चाहिए। बात–चीत के माध्यम से सबमें ज्ञान एवं समझ पैदा करने की क्षमता होनी चाहिए। नेता में गुप्त सूचनाओं को गुप्त ही रहने देने की कला, षड्यत्रों को काबू में करने की कला, वफादारी, ईमानदारी, कुशाग्र बुद्धि वाला, अन्वेषण आदि की कला होनी चाहिए। नेता को समय के साथ ज्ञान का स्तर बढ़ाते हुए तकनीकी ज्ञान में भी निपुण एवं सख्त निर्णय लेने वाला होना चाहिए। आगे कहा कि संस्कृति से मूल्यों का निर्धारण होता है तथा मूल्य उस समाज के व्यक्तियों के दृष्टिकोण का निर्धारण करते हैं। नेता की भूमिका निर्धारित करते हुए कहा कि देश काल एवं परिस्थिति के अनुसार आत्म मूल्यांकन किया जाना

चाहिए। आगे अनेकता में एकता, संतुलन, आत्मविश्वास, आत्म मूल्यांकन प्रमाणिकता, जिम्मेदारी आदि विभिन्न मूल्यों के माध्यम से नेता के गुणों को व्याख्यायित किया। विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देते हुए मेजर चतुर्वेदी ने कहा कि दूसरों में इन मूल्यों को स्थापित करना सबसे आवश्यक कदम है। सर्वप्रथम इन मूल्यों को स्वयं में स्थापित करें तथा अपने व्यक्तित्व में उसको जोड़ें। **आइजन हावर** की परिभाषा को बताते हुए आगे कहा कि **'किसी व्यक्ति से वह काम करा लो जो करते हुए करने वाले को यह महसूस हो कि यह उसका कर्तव्य है यही सच्चे नेतृत्व का लक्षण है।'** मेजर चतुर्वेदी ने अपनी वाणी को विराम देते हुए कहा कि नेता वही है जिसको स्वयं पर विश्वास हो, जो सबको अपना काम खुद करने के लिए प्रेरित कर सके।

कार्यक्रम का संयोजन प्राचीन इतिहास विभाग के अध्यक्ष **डॉ. सुबोध कुमार मिश्र**, संचालन रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य **श्री रमाकान्त दुबे** एवं आभार ज्ञापन उप प्राचार्य **डॉ. विजय कुमार चौधरी** ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

(डॉ. सुधा शुक्ल)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी